[श्री वृद्धि चन्द्र जैन]

करने के कारण पानी का स्तर दिनों दिन गिर रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि ये नल-कूप 15 वर्ष से 30 वर्ष तक भी नहीं चल सकेंगे और उनका पानी बिल्कुल समाप्त हो जाएगा। ऐसी स्थिति में भविष्य में इन थार के सीमावर्ती रेगिस्तानी क्षेत्रों में जहां वर्षा बहुत कम होती है, पीने के पानी का संकट और बढ़ जाएगा और बढ़ी हुई आबादी को उन क्षेत्रों से हटाने का प्रश्न खड़ा हो जाएगा।

इन रेगिस्तानी क्षेत्रों में पानी का स्थाई हल राजस्थान नहर द्वारा ही हो सकता है।

अत: निवेदन है कि राजस्थान सरकार केन्द्रीय सरकार के सहयोग से राजस्थान नहर द्वारा रेगिस्तानी बाड़मेर, जैसलमेर और जोधपुर जिलों में महत्वपूर्ण नगरों एवं ग्रामों में पानी पहुंचाने की तुरन्त योजना बनाकर उक्त समस्या का स्थायी हल करने में सक्रिय सहयोग दे।

(vii) Inclusion of research on betel leaves in the 20-Point Programme and providing the needy betel leaf cultivators with interest free loans

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर): उपाध्यक्ष महोदय, बिहार के 33 जिलों में से 23 जिलों में पान की खेती होती है। नालन्दा, नवादा, औरंगाबाद एवं गया में 1 हजार एकड़ में मगही पान उगाये जाते हैं और शेष 19 जिलों में विभिन्न किस्मों के पान जैसे—बंगला, बंगरा, कपूरी, साँची आदि की खेती 6890 एकड़ भूमि में होती है। अत: कुल 7890 एकड़ में लगभग साढ़े नौ लाख व्यक्ति पान की खेती से जीविका अर्जित करते हैं।

हर दृष्टि से पान-कृषक सीमान्त किसान हैं। एक परिवार तीन डेसीमल से लेकर एक एकड़ भूमि पर शोधकार्य न होने से पुरानी रीति से ही राम-भरोसे खेती कर अपना गुजारा करता है। गत तीन वर्षों से पान में ग्रेश का प्रकोप होना आरम्भ हो गया है। गत वर्ष तो मगही पान बिल्कुल नष्ट हो गया। अन्य फसलों की तरह पान की दवा और खाद की जानकारी के अभाव में पान-कृषक खेती को रोग से बचाने में असमर्थ हैं। इस शीत लहरी से बिहार में यदि दक्षिण भारत से पान नहीं आता तो पान का दर्शन भी दुर्लभ हो जाता।

अत: मैं सरकार से मांग करता हूं कि :

1. पान-कृषकों को राहत एवं पान की खेती के विकास—इसे बीस सूत्री कार्यक्रम में सम्मिलित कर मदद की जाय तथा पुन: खेती करने के लिये ज़रूरत मन्द परिवार को उसकी क्षमता और भूमि पर कब्जे के आधार पर कम से कम दो हज़ार और अधिकतम 20 हज़ार रुपये का सूद रहित ऋण दिया जाय।

2. पान की खेती के काम में आने वाले खर और बाँस जो जंगलों से उपलब्ध होते हैं, उसे पान-कृषकों को उनके संगठनों के माध्यम से रियायती दर मुहैया किया जाय।

3. बिहार में राजेन्द्र कृषि विश्व विद्यालय पूसा में पान पर शोध एवं अनुसंधान आरम्भ कराया जाय।

12.32 hrs.

FINANCE BILL, 1983—*Contd*

MR. DEPUTY-SPEAKER : We shall now take up General Discussion